INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

दिल्ली सल्तनत में 'बाजार संस्कृति' और विदेशी यात्रियों का दृष्टिकोण (13वीं से 16वीं शताब्दी)

मो॰ फारूक आलाम,
शोधार्थी, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

डॉ. राकेश रौशन,
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
जी॰ डी ॰ कॉलेज, बेगूसराय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

सारांश

दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक विस्तार के साथ 13वीं से 16वीं शताब्दी के बीच उत्तर भारत में नगरीकरण, व्यापार और बाजार-व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। दिल्ली केवल राजनीतिक राजधानी नहीं रही, बल्कि वह उपभोग, उत्पादन, विनिमय और अंतरक्षेत्रीय व्यापार का एक प्रमुख केंद्र बन गई। इस प्रक्रिया में राज्य की राजस्व-व्यवस्था, मुद्रा-प्रचलन, सैनिक आवश्यकताओं, शहरी अभिजात वर्ग की मांग तथा ग्रामीण अधिशेष को शहरों तक पहुँचाने वाले व्यापारी समुदायों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में बाजारों पर प्रत्यक्ष सरकारी नियंत्रण इस प्रक्रिया का सबसे स्पष्ट उदाहरण था। उसने आवश्यक वस्तुओं, अनाज, कपड़े, घोड़ों, पशुओं तथा अन्य वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए अधिकारियों, गुप्तचरों, अनाज भंडारों और व्यापारी-पंजीकरण की विस्तृत व्यवस्था विकसित की। इसके विपरीत लोदी काल में वस्तुओं की कम कीमतें मुख्यतः कृषि उत्पादन, आपूर्ति और मुद्रा-व्यवस्था से संबंधित परिस्थितियों का परिणाम दिखाई देती हैं। इस शोध-पत्र में दिल्ली सल्तनत की 'बाजार संस्कृति' को केवल वस्तुओं की खरीद-बिक्री तक सीमित न मानकर शहरी सामाजिक जीवन, सरायों, मार्गों, मंडियों, कारीगरों, दलालों, साहूकारों तथा लंबी दूरी के व्यापारिक नेटवर्क के समग्र रूप में देखा गया है। मोरक्को के यात्री इब्न बतूता का विवरण इस अध्ययन का प्रमुख विदेशी प्रत्यक्षदर्शी स्रोत है। उसने दिल्ली को विशाल जनसंख्या वाले नगर के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके बाजारों, अनाज मंडियों और सार्वजनिक जीवन का उल्लेख किया। अन्य विदेशी यात्रियों के भारतीय व्यापार संबंधी विवरणों को तुलनात्मक स्रोत के रूप में प्रयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सल्तनतकालीन बाजार राज्य, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के बीच सक्रिय संपर्क-स्थल थे तथा इन्हीं के आधार पर मध्यकालीन भारतीय नगरों की आर्थिक और बहुसांस्कृतिक पहचान विकसित हुई।

मुख्य शब्दः दिल्ली सल्तनत, बाजार संस्कृति, अलाउद्दीन खिलजी, इब्न बतूता, सराय, व्यापारिक नेटवर्क, नगरीकरण, लोदी काल, दिल्ली, आगरा।

1. प्रस्तावना

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) का उदय भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी। इस काल ने न केवल राजनीतिक सत्ता के केंद्रीकरण को देखा, बल्कि एक अनूठी और अत्यधिक विकसित 'बाजार संस्कृति' को भी जन्म दिया। 13वीं से 16वीं शताब्दी के बीच का समय भारत में व्यापक शहरीकरण, मुद्रा अर्थव्यवस्था के विस्तार, और सुदृढ़ व्यापारिक नेटवर्क के निर्माण का गवाह बना। दिल्ली, दौलताबाद, लखनौती, और जौनपुर जैसे शहर न केवल राजनीतिक सत्ता के केंद्र बने, बल्कि वे अंतर-क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य के प्रमुख हब के रूप में उभरे। इस आर्थिक विकास की धुरी यहाँ की बाजार संस्कृति थी, जो शासकों के नीतिगत हस्तक्षेपों, भौगोलिक अवस्थिति, और कुशल प्रशासनिक ढांचे से संचालित होती थी। सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के अभूतपूर्व बाजार नियंत्रणों से लेकर लोदी वंश के काल में विकसित हुए सराय-आधारित विकेंद्रीकृत व्यापारिक नेटवर्क तक, इस काल की अर्थव्यवस्था गतिशील और बहुआयामी रही। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य 13वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान दिल्ली सल्तनत की बाजार व्यवस्था, शहरी विन्यास, सरायों की भूमिका, और व्यापारिक नेटवर्क का ऐतिहासिक व आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। साथ ही, तत्कालीन भारत की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों जैसे इब्न बतूता, शिहाबुद्दीन अल-उमरी, और अन्य यात्रियों के दृष्टिकोणों के माध्यम से इस बाजार संस्कृति की सत्यता और प्रभाव का मूल्यांकन करना है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और शहरीकरण का उदय

दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पूर्व, भारत की आर्थिक संरचना काफी हद तक विकेंद्रीकृत थी, जिसे कई इतिहासकार 'सामंतवादी प्रतिमान' के रूप में देखते हैं। सल्तनत के आगमन ने इस ढांचे को तोड़ दिया। प्रख्यात इतिहासकार मोहम्मद हबीब ने इसे 'शहरी क्रांति' की संज्ञा दी है। सुल्तानों ने पुराने शहरों का पुनरुद्धार किया और नए नगरों की स्थापना की। इन शहरों की रीढ़ 'बाजार' थे। ग्रामीण क्षेत्रों से भू-राजस्व का नकद रूप में संग्रह करने की नीति ने किसानों को अपने अधिशेष अनाज को शहरी बाजारों में बेचने के लिए मजबूर किया। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था के बीच एक मजबूत कड़ी स्थापित की। शहर केवल उपभोग के केंद्र नहीं रहे, बल्कि वे उत्पादन और विनिर्माण के भी केंद्र बन गए। शाही कारखानों की स्थापना ने विलासिता की वस्तुओं और सैन्य उपकरणों के उत्पादन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया, जिसने बाजार में मांग और आपूर्ति के चक्र को तीव्र कर दिया।

3. अलाउद्दीन खिलजी के बाजार सुधार: आर्थिक अधिनायकवाद का एक प्रयोग

दिल्ली सल्तनत के आर्थिक इतिहास में अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.) के बाजार सुधार सबसे अभूतपूर्व और कठोर कदम थे। समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में इन सुधारों का विस्तृत विवरण दिया है।

सुधारों का मूल कारण

अलाउद्दीन खिलजी के सुधारों का मुख्य उद्देश्य कोई लोक-कल्याणकारी भावना नहीं थी, बल्कि एक ठोस सैन्य और राजनीतिक आवश्यकता थी। मंगोल आक्रमणों के निरंतर खतरे से निपटने और साम्राज्य विस्तार के लिए सुल्तान को एक विशाल और कुशल स्थायी सेना की आवश्यकता थी। यदि सैनिकों को भारी वेतन दिया जाता, तो शाही खजाना कुछ ही वर्षों में खाली हो जाता। इसलिए, अलाउद्दीन ने एक चतुर युक्ति अपनाई, उसने सैनिकों के वेतन को सीमित कर दिया और यह सुनिश्चित किया कि सैनिक उस सीमित वेतन में

सम्मानजनक जीवन जी सकें। इसके लिए आवश्यक था कि बाजार में जीवन रक्षक और अन्य सभी वस्तुओं की कीमतें बेहद कम और स्थिर रखी जाएं।

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली की बाजार व्यवस्था को अधिक संगठित और नियंत्रित बनाने के उद्देश्य से वस्तुओं की प्रकृति के आधार पर बाजारों का त्रिपक्षीय वर्गीकरण किया। पहला था केंद्रीय अनाज बाजार (मंडी), जहाँ गेहूँ, जौ, चावल, दालें तथा अन्य आवश्यक खाद्यान्नों का क्रय-विक्रय होता था। राज्य ने इन वस्तुओं के मूल्य नियंत्रित रखे ताकि सामान्य नागरिकों और सैनिकों को उचित एवं सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध हो सके। दूसरा प्रमुख बाजार सराय-ए-अदल था, जिसे विशेष रूप से कपड़े और अन्य मूल्यवान वस्तुओं के व्यापार के लिए विकसित किया गया था। यहाँ महंगे वस्त्र, रेशमी कपड़े, चीनी, जड़ी-बूटियाँ, घी, दीपक का तेल और सूखे मेवे जैसी वस्तुएँ बेची जाती थीं तथा स्थानीय एवं विदेशी व्यापारी दोनों इसमें भाग लेते थे। इस बाजार को राज्य की ओर से विशेष संरक्षण और आर्थिक सहायता भी प्राप्त थी। तीसरा वर्ग घोड़ों, दासों और मवेशियों के बाजार का था। चूँकि सल्तनत की सैन्य शक्ति का प्रमुख आधार घुड़सवार सेना थी, इसलिए घोड़ों की खरीद-बिक्री पर विशेष नियंत्रण रखा गया और बिचौलियों की भूमिका को सीमित करने के लिए कठोर नियम बनाए गए। घोड़ों का मूल्य उनकी गुणवत्ता और श्रेणी के आधार पर निर्धारित किया जाता था, जबकि दासों और मवेशियों की कीमतें भी राज्य द्वारा नियंत्रित थीं। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी की त्रिपक्षीय बाजार व्यवस्था ने आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता, मूल्य नियंत्रण, सैन्य आवश्यकताओं और व्यापारिक अनुशासन को एक संगठित प्रशासनिक ढाँचे में बाँध दिया।

मूल्य नियंत्रण और कठोर प्रशासनिक तंत्र

अलाउद्दीन खिलजी के बाजार सुधारों की सफलता का एक प्रमुख कारण उसका अत्यंत कठोर, केंद्रीकृत और सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढाँचा था। बाजारों पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने के लिए उसने 'दीवान-ए-रियासत' नामक विभाग की स्थापना की, जो व्यापार, मूल्य-नियंत्रण और बाजार संबंधी व्यवस्थाओं की देखरेख करता था। इसके अंतर्गत बाजारों की निगरानी के लिए 'शहना-ए-मंडी' नामक अधिकारी नियुक्त किए जाते थे, जिनका कार्य निर्धारित मूल्यों का पालन कराना, व्यापारियों की गतिविधियों पर नजर रखना तथा जमाखोरी, कालाबाजारी और कम तौल जैसी अनियमितताओं को रोकना था। समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी के विवरण से ज्ञात होता है कि बाजार अधिकारियों और दंड व्यवस्था का व्यापारियों पर गहरा प्रभाव था तथा निर्धारित कीमतों में मनमानी वृद्धि करना अत्यंत कठिन था। सुल्तान केवल सरकारी अधिकारियों की रिपोर्ट पर निर्भर नहीं रहता था, बल्कि बरीदों और गुप्तचरों के माध्यम से भी बाजारों की स्वतंत्र सूचनाएँ प्राप्त करता था। वस्तुओं की गुणवत्ता, कीमत और सही तौल की जाँच के लिए गुप्त रूप से खरीद करवाए जाने का भी उल्लेख मिलता है। बरनी ने नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यापारियों के लिए अत्यंत कठोर शारीरिक दंडों का वर्णन किया है, जो खिलजी शासन की कठोर बाजार-अनुशासन नीति को दर्शाता है। अनाज भंडारण और राशनिंग व्यवस्था भी अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नीति का महत्वपूर्ण अंग थी। सूखा, अकाल अथवा खाद्यान्न संकट की स्थिति में दिल्ली में अनाज की कमी न होने पाए, इसके लिए राज्य ने दिल्ली तथा उसके आसपास राजकीय अन्नागारों में बड़ी मात्रा में अनाज का भंडारण करवाया। सामान्य परिस्थितियों में भी अनाज की आपूर्ति पर प्रशासनिक निगरानी रखी जाती थी, जबकि संकट के समय संचित अनाज को नियंत्रित मात्रा में बाजार में उपलब्ध कराया जाता था। अकाल जैसी परिस्थितियों में राशनिंग व्यवस्था अपनाई जाती थी, जिसके अंतर्गत परिवारों को आवश्यकता के अनुसार निश्चित मात्रा में खाद्यान्न प्रदान किया जाता था। इस नीति का

उद्देश्य खाद्यान्न की कृत्रिम कमी, जमाखोरी और मूल्य-वृद्धि को रोकना तथा दिल्ली की विशाल नागरिक और सैनिक आबादी के लिए आवश्यक वस्तुओं की नियमित उपलब्धता सुनिश्चित करना था। इस प्रकार कठोर बाजार निरीक्षण, गुप्तचर व्यवस्था, राजकीय अन्नागार और नियंत्रित वितरण प्रणाली ने अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य-नियंत्रण कार्यक्रम को अपेक्षाकृत प्रभावी बनाया।

4. तुगलक से लोदी काल तक बाजार संस्कृति का क्रमिक विकास: अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद उसके कठोर नियंत्रण समाप्त हो गए, लेकिन उसने बाजार की जिस रीढ़ को तैयार किया था, वह आने वाली शताब्दियों में विकसित होती रही। तुगलक, सैयद और लोदी राजवंशों के दौरान बाजार संस्कृति ने एक अधिक स्वाभाविक, बाजार-संचालित और विकेंद्रीकृत रूप ले लिया।

गयासुद्दीन और मुहम्मद बिन तुगलक का काल: गयासुद्दीन तुगलक ने खिलजी के दमनकारी नियंत्रणों को हटाकर कृषि को बढ़ावा दिया, जिससे बाजारों में अनाजों की आपूर्ति स्वाभाविक रूप से बढ़ गई। मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.) के काल में बाजार संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया। उसने 'सांकेतिक मुद्रा' का प्रयोग किया, जिसमें तांबे और पीतल के सिक्कों को चांदी के टके के बराबर मूल्य दिया गया। यद्यपि यह प्रयोग बड़े पैमाने पर जालसाजी के कारण विफल रहा, लेकिन इसने यह साबित किया कि तत्कालीन बाजार मुद्रा अर्थव्यवस्था के प्रति कितने संवेदनशील और जागरूक हो चुके थे।

फिरोज शाह तुगलक और बागवानी क्रांति: फिरोज शाह तुगलक (1351–1388 ई.) ने दिल्ली के आस-पास 1200 से अधिक फलों के बाग लगवाए। इन बागों से होने वाली भारी पैदावार ने दिल्ली के फल बाजारों को समृद्ध किया और शाही खजाने को प्रतिवर्ष 1,80,000 टका की अतिरिक्त आय प्रदान की। उसके काल में दासों की संख्या अत्यधिक बढ़ गई (लगभग 1,80,000), जिसके कारण दासों के बाजारों का स्वरूप और अधिक विस्तृत हो गया।

लोदी काल और आर्थिक विकेंद्रीकरण (1451-1526 ई.): लोदी सुल्तानों, विशेषकर सिकंदर लोदी के काल में, बाजार नियंत्रणों को पुनः जीवित करने का प्रयास किया गया लेकिन एक भिन्न रूप में। सिकंदर लोदी ने आवश्यक वस्तुओं की कीमतें कम रखने के लिए चुंगी करों को हटा दिया। लोदी काल तक आते-आते दिल्ली के साथ-साथ प्रांतीय राजधानियाँ जैसे जौनपुर, अहमदाबाद और बुरहानपुर भी विशाल बाजार संस्कृतियों के केंद्र बन चुके थे। अब केंद्रीय नियंत्रण के स्थान पर स्थानीय मंडियाँ अधिक प्रभावी हो गई थीं।

5. सरायों का नेटवर्क और उनकी बहुआयामी भूमिका

13वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान लंबी दूरी के व्यापार, यात्राओं और प्रशासनिक संचार को सुगम बनाने में सरायों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही। दिल्ली सल्तनत के प्रमुख व्यापारिक एवं सामरिक मार्गों, जैसे दिल्ली से दौलताबाद तथा दिल्ली से लखनौती (बंगाल) की ओर जाने वाले मार्गों पर यात्रियों और व्यापारियों की सुविधा के लिए विभिन्न स्थानों पर सरायें स्थापित की गईं। ये सराय केवल यात्रियों के विश्राम और रात्रि-निवास के स्थान नहीं थीं, बल्कि व्यापारिक गतिविधियों, सुरक्षा और संचार के बहुआयामी केंद्र के रूप में कार्य करती थीं। व्यापारिक मार्गों पर यात्रा करने वाले व्यापारी प्रायः काफिलों में चलते थे और सराय उन्हें अपेक्षाकृत सुरक्षित पड़ाव उपलब्ध कराती थीं। कई महत्वपूर्ण पड़ावों पर प्रशासनिक या सुरक्षा व्यवस्था भी उपलब्ध रहती थी, जिससे व्यापारियों को डाकुओं और लुटेरों के खतरे से बचने में सहायता मिलती थी। सरायों का आर्थिक महत्व भी उल्लेखनीय था, क्योंकि इनके आसपास छोटे उप-बाजार विकसित हो जाते थे, जहाँ निकटवर्ती गाँवों के किसान और उत्पादक यात्रियों तथा व्यापारियों को अनाज, फल-सब्जियाँ, पशुओं के लिए

चारा और अन्य दैनिक आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराते थे। इसके बदले वे व्यापारियों से नमक, वस्त्र, धातु की वस्तुएँ और दूरस्थ क्षेत्रों से लाई गई अन्य सामग्री प्राप्त कर सकते थे। इस प्रकार सरायों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और लंबी दूरी के व्यापार के बीच संपर्क स्थापित करने में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त अनेक महत्वपूर्ण मार्गों पर सरायें सूचना और संचार केंद्र के रूप में भी उपयोगी थीं। शाही डाक और संदेश व्यवस्था से जुड़े दूत विभिन्न पड़ावों पर घोड़े बदलकर प्रशासनिक सूचनाओं को अपेक्षाकृत शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे। इस प्रकार सल्तनतकालीन सरायें आवास, सुरक्षा, स्थानीय व्यापार और राजकीय संचार को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण संस्थाएँ थीं, जिन्होंने मध्यकालीन भारत में व्यापारिक नेटवर्क और क्षेत्रीय संपर्क के विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

व्यापारिक नेटवर्क और परिवहन के साधन: बाजार संस्कृति का विस्तार इस बात पर निर्भर था कि माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक कितनी तेजी से पहुँचता है। बंजारों (Nomadic Traders) का एक विशाल समुदाय था जो हजारों बैलों पर अनाज और नमक लादकर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक यात्रा करता था। जल मार्गों का भी व्यापक उपयोग होता था; गंगा, यमुना और सिंधु नदियों के माध्यम से भारी सामानों का परिवहन नावों द्वारा किया जाता था, जो काफी सस्ता और सुरक्षित था।

6. विदेशी यात्रियों का दृष्टिकोण और समकालीन साक्ष्य

विदेशी यात्रियों के विवरण दिल्ली सल्तनत की बाजार संस्कृति को समझने के लिए सबसे निष्पक्ष और सजीव प्राथमिक स्रोत हैं। इन यात्रियों ने बाजारों की हलचल, कीमतों, और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को अपनी आँखों से देखा और लिपिबद्ध किया।

क. इब्न बतूता और उसका यात्रा वृत्तांत 'रिहला' (14वीं शताब्दी)

मोरक्को के प्रसिद्ध यात्री इब्न बतूता 1333 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दिल्ली पहुँचा और लगभग नौ वर्षों तक भारत में रहा। उसकी प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत कृति ‘किताब-उर-रिहला’ दिल्ली सल्तनत के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इब्न बतूता ने दिल्ली को अत्यंत विशाल, समृद्ध और घनी आबादी वाला नगर बताया तथा इसकी मजबूत प्राचीरों और भव्य द्वारों, विशेषकर बदायूँ दरवाजे, का उल्लेख किया है। उसके विवरण से यह भी ज्ञात होता है कि नगर के प्रवेश मार्ग प्रशासनिक और राजस्व व्यवस्था से जुड़े हुए थे। दिल्ली के बाजारों का वर्णन करते हुए उसने ‘तराबआबाद’, अर्थात मनोरंजन से संबंधित बाजार, का विशेष उल्लेख किया है, जहाँ गायक, संगीतकार और नर्तकियाँ अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। उसके अनुसार बाजार की दुकानों और बैठने के स्थानों को आकर्षक वस्त्रों तथा बिछावनों से सजाया जाता था और लोग वहाँ संगीत एवं मनोरंजन का आनंद लेने के लिए एकत्र होते थे। यह विवरण इस तथ्य को उजागर करता है कि सल्तनतकालीन बाजार केवल वस्तुओं के क्रय-विक्रय के स्थल नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक मेल-जोल, मनोरंजन और सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र भी थे। इब्न बतूता ने भारतीय बाजारों में उपलब्ध व्यापारिक वस्तुओं की विविधता का भी उल्लेख किया है। उसने विशेष रूप से भारतीय सूती वस्त्रों और महीन मलमल की गुणवत्ता की प्रशंसा की, जिनकी विदेशी बाजारों में भी मांग थी। इसके अतिरिक्त पान के पत्तों और सुपारी जैसी वस्तुओं के व्यापक उपयोग तथा व्यापार का उल्लेख उसके विवरण में मिलता है। इस प्रकार इब्न बतूता का यात्रा-वृत्तांत सल्तनतकालीन दिल्ली की बाजार संस्कृति को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि उसके नगरीय वैभव, सामाजिक जीवन, मनोरंजन और अंतरक्षेत्रीय व्यापार के संदर्भ में भी समझने का अवसर प्रदान करता है।

ख. शिहाबुद्दीन अल-उमरी और 'मसालिक अल-अबसार' (14वीं शताब्दी)

14वीं शताब्दी के प्रसिद्ध अरब विद्वान शिहाबुद्दीन अल-उमरी दमिश्क का निवासी था और यद्यपि वह स्वयं भारत नहीं आया, फिर भी उसने भारत से लौटने वाले व्यापारियों, यात्रियों, विद्वानों और अन्य जानकार व्यक्तियों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर अपनी प्रसिद्ध कृति 'मसालिक अल-अबसार फी ममालिक अल-अमसार' में दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया। उसका विवरण विशेष रूप से मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल की आर्थिक समृद्धि, वस्तुओं की प्रचुर उपलब्धता और अपेक्षाकृत कम कीमतों को रेखांकित करता है। अल-उमरी के विवरण से यह संकेत मिलता है कि दिल्ली तथा सल्तनत के अन्य प्रमुख नगरों के बाजारों में अनाज और दैनिक उपभोग की वस्तुएँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थीं, जिसके कारण सामान्य जीवन-यापन की लागत अपेक्षाकृत कम थी। वह दिल्ली की विशालता, समृद्धि और विकसित नगरीय अर्थव्यवस्था की भी प्रशंसा करता है। इसके अतिरिक्त उसने सल्तनत की तेज और सुव्यवस्थित डाक एवं संचार व्यवस्था का उल्लेख किया, जिसके माध्यम से शाही आदेश, प्रशासनिक सूचनाएँ और विभिन्न क्षेत्रों की खबरें तीव्र गति से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचती थीं। इस प्रकार की संचार व्यवस्था का अप्रत्यक्ष लाभ व्यापारियों को भी मिलता था, क्योंकि बाजारों तक दूरस्थ क्षेत्रों की परिस्थितियों, मार्गों और व्यापारिक गतिविधियों से संबंधित सूचनाएँ अपेक्षाकृत शीघ्र पहुँच सकती थीं। इसलिए अल-उमरी का वर्णन दिल्ली सल्तनत की बाजार संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह वस्तुओं की उपलब्धता, कम कीमतों, शहरी समृद्धि और प्रभावी संचार नेटवर्क को उस समय की आर्थिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं के रूप में प्रस्तुत करता है।

ग. 15वीं शताब्दी के यात्री: निकोलो डी कोंटी और अब्दुर रज्जाक

यद्यपि इतालवी यात्री निकोलो डी कोंटी (1420 ई.) और फारसी राजदूत अब्दुर रज्जाक (1443 ई.) ने मुख्य रूप से दक्षिण भारत के विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की, लेकिन उनके विवरण उत्तर भारत और दिल्ली सल्तनत के साथ होने वाले अंतर-क्षेत्रीय व्यापारिक नेटवर्क पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। वे बताते हैं कि कैसे उत्तर भारत के वस्त्र और सूती माल दक्षिण के बाजारों में बिकते थे और दक्षिण के मसाले और कीमती पत्थर दिल्ली के बाजारों की शोभा बढ़ाते थे।

घ. अफानासी निकितिन और 'तीन समुद्रों के पार की यात्रा' (15वीं शताब्दी का अंत)

रूसी व्यापारी अफानासी निकितिन ने 1469-1472 ई. के दौरान बहमनी साम्राज्य का दौरा किया। उसने भारत के बाजारों में घोड़ों और दासों के व्यापार का एक सजीव विवरण दिया है। उसने उल्लेख किया कि उत्तम नस्ल के अरबी और ईरानी घोड़ों की मांग दिल्ली और अन्य सल्तनतों की सेनाओं में इतनी अधिक थी कि वे अत्यधिक ऊंचे दामों पर बेचे जाते थे। उसने बाजारों में मौजूद गहरे सामाजिक आर्थिक अंतर को भी रेखांकित किया, जहाँ एक तरफ असीम विलासिता थी और दूसरी तरफ आम जनता की अत्यधिक गरीबी।

7. मौद्रिक प्रणाली, हुंडी और ऋण संस्कृति: सल्तनतकालीन बाजार संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता विकसित मौद्रिक व्यवस्था तथा साख और ऋण की प्रणाली थी, जिसने स्थानीय और लंबी दूरी के व्यापार को अधिक सुविधाजनक बनाया। दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इल्तुतमिश (1211–1236 ई.) द्वारा चाँदी के 'टंका' और ताँबे के 'जीतल'को व्यवस्थित एवं मानकीकृत किए जाने से मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण प्रोत्साहन मिला। 14वीं शताब्दी तक दिल्ली तथा अन्य प्रमुख नगरों में सिक्कों का उपयोग व्यापारिक और दैनिक लेन-देन में व्यापक रूप से होने लगा था। इसके परिणामस्वरूप वस्तु-विनिमय पर निर्भरता कम हुई

और बाजारों में वस्तुओं की खरीद-बिक्री, मजदूरी तथा अन्य आर्थिक भुगतान अपेक्षाकृत सरल हो गए। मुद्रा अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ सर्राफों, साहूकारों और महाजनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती गई। सर्राफ केवल सिक्कों की शुद्धता जाँचने और विभिन्न प्रकार की मुद्राओं को बदलने का कार्य नहीं करते थे, बल्कि व्यापारियों को ऋण और साख संबंधी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराते थे। लंबी दूरी के व्यापार में बड़ी मात्रा में सोने या चाँदी के सिक्के साथ लेकर चलना जोखिमपूर्ण था, इसलिए व्यापारिक लेन-देन में हुंडी जैसी साख-पत्र व्यवस्था का प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुआ। इसके माध्यम से व्यापारी किसी प्रमुख व्यापारिक केंद्र में धन जमा कराकर साख-पत्र प्राप्त कर सकता था और संबंधित वित्तीय नेटवर्क के माध्यम से दूसरे नगर में भुगतान प्राप्त कर सकता था। इससे नकदी को लंबी दूरी तक ले जाने की आवश्यकता कम हुई और व्यापारिक यात्राएँ अपेक्षाकृत सुरक्षित बनीं। इस व्यवस्था ने दिल्ली, लखनौती, गुजरात और दक्कन जैसे दूरस्थ व्यापारिक केंद्रों के बीच आर्थिक संपर्क को मजबूत किया तथा साख, ऋण और वित्तीय विश्वास पर आधारित व्यापारिक संस्कृति के विकास में योगदान दिया। इस प्रकार मानकीकृत मुद्रा, सर्राफों और महाजनों की सक्रियता तथा हुंडी जैसी वित्तीय व्यवस्थाओं ने सल्तनतकालीन बाजारों को अधिक संगठित और व्यापक व्यापारिक नेटवर्क से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दिल्ली सल्तनत के बाजार केवल आर्थिक लेन-देन के केंद्र नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक समामेलन, सांस्कृतिक संपर्क और विविध समुदायों के पारस्परिक संबंधों के जीवंत मंच भी थे। इन बाजारों में विभिन्न धर्मों, जातियों, क्षेत्रों और राष्ट्रीयताओं से संबंधित व्यापारी, साहूकार, शिल्पकार, कारीगर तथा उपभोक्ता एक साथ सक्रिय रहते थे। स्थानीय व्यापारिक वर्ग में हिंदू साहूकारों, महाजनों, बनियों, मुल्तानियों और अन्य क्षेत्रीय व्यापारिक समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जबकि मध्य एशिया, खुरासान, ईरान और इराक से आने वाले अनेक विदेशी व्यापारी भी सल्तनतकालीन नगरों के व्यापारिक जीवन का हिस्सा थे। इन स्थानीय और विदेशी व्यापारियों के बीच विकसित व्यावसायिक संबंध वस्तुओं के आदान-प्रदान के साथ-साथ साख, ऋण और पारस्परिक विश्वास पर आधारित थे। इस प्रकार बाजारों ने विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों को नियमित संपर्क में लाकर एक बहु-सांस्कृतिक शहरी वातावरण के निर्माण में योगदान दिया। साथ ही, बाजारों की प्रकृति और वहाँ उपलब्ध वस्तुओं में तत्कालीन सामाजिक वर्ग-विभाजन भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। शाही परिवार, अमीरों और उच्च वर्ग के लिए बने विशिष्ट बाजारों में कीमती आभूषण, उत्कृष्ट वस्त्र, फारसी कालीन, विदेशी विलासिता की वस्तुएँ, उत्तम मलमल और अन्य महँगी सामग्री उपलब्ध होती थी, जबकि सामान्य जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति स्थानीय मंडियों, छोटे बाजारों और साप्ताहिक हाटों से होती थी, जहाँ अनाज, साधारण वस्त्र, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तथा अपेक्षाकृत सस्ता सामान बेचा जाता था। इस प्रकार सल्तनतकालीन बाजार आर्थिक असमानताओं और सामाजिक स्तरों को प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ विभिन्न समुदायों, भाषाओं, वस्तुओं और सांस्कृतिक परंपराओं के मिलन-स्थल भी थे। यही बहुस्तरीय संपर्क आगे चलकर मध्यकालीन भारतीय नगरों में एक मिश्रित और समन्वित शहरी संस्कृति के विकास का महत्वपूर्ण आधार बना।

8. आलोचनात्मक विश्लेषण: अर्थव्यवस्था और समाज पर प्रभाव

दिल्ली सल्तनत की इस बाजार संस्कृति और सुधारों के गहरे दूरगामी प्रभाव पड़े, जिन्हें दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है:

सकारात्मक प्रभाव: दिल्ली सल्तनत की बाजार व्यवस्था और आर्थिक नीतियों के अनेक सकारात्मक प्रभाव दिखाई देते हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव आर्थिक एकीकरण के रूप में सामने आया, क्योंकि सल्तनत के विस्तृत क्षेत्रों में साझा मौद्रिक प्रणाली, नियंत्रित बाजार व्यवस्था और व्यापारिक मार्गों के विकास ने विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक संपर्क को मजबूत किया। इससे उत्तर भारत के अनेक नगर और व्यापारिक केंद्र एक-दूसरे से अधिक निकटता से जुड़ गए तथा क्षेत्रीय अलगाव में कमी आई। बाजारों की समृद्धि ने शहरी विकास को भी गति प्रदान की। बढ़ती व्यापारिक गतिविधियों और निर्माण कार्यों के कारण दस्तकारों, शिल्पकारों, बुनकरों, राजमिस्त्रियों, धातुकर्मियों तथा अन्य श्रमिक वर्गों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए, जिससे नगरों की जनसंख्या और आर्थिक सक्रियता में वृद्धि हुई। इसके साथ ही भारतीय वस्त्रों, मसालों, कृषि उत्पादों और अन्य व्यापारिक वस्तुओं की बढ़ती मांग ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक साख को भी मजबूत किया। इब्न बतूता और शिहाबुद्दीन अल-उमरी जैसे विदेशी यात्रियों और लेखकों के विवरणों से सल्तनतकालीन नगरों की समृद्धि, वस्तुओं की प्रचुरता, विकसित बाजारों और सक्रिय व्यापारिक जीवन का परिचय मिलता है। इन विवरणों ने भारत को समकालीन विश्व में एक समृद्ध, आकर्षक और महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार सल्तनतकालीन बाजार संस्कृति ने आर्थिक एकीकरण, रोजगार सृजन, शहरीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक प्रतिष्ठा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

नकारात्मक प्रभाव और सीमाएं: दिल्ली सल्तनत की बाजार व्यवस्था, विशेष रूप से अलाउद्दीन खिलजी की कठोर आर्थिक नीतियों के कुछ नकारात्मक प्रभाव और स्पष्ट सीमाएँ भी थीं। इन नीतियों का सबसे अधिक दबाव ग्रामीण कृषक वर्ग पर पड़ा, क्योंकि शहरों और सेना के लिए अनाज की कीमतों को निम्न स्तर पर बनाए रखने के उद्देश्य से राज्य ने कृषि उत्पादन और राजस्व वसूली पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया। किसानों से उपज का बड़ा हिस्सा कर के रूप में लिया जाता था और उनके पास प्रायः केवल अपनी आजीविका तथा अगली फसल के लिए आवश्यक संसाधन ही शेष रहते थे। इस प्रकार शहरी उपभोक्ताओं और सैनिकों को सस्ती वस्तुएँ उपलब्ध कराने की नीति का भार काफी हद तक ग्रामीण उत्पादकों ने वहन किया। समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी के विवरण भी कृषकों पर पड़े इस दबाव की ओर संकेत करते हैं। इसके अतिरिक्त खिलजी की बाजार व्यवस्था अत्यधिक केंद्रीकृत और अधिनायकवादी नियंत्रण पर आधारित थी। मूल्य निर्धारण, भंडारण, तौल, व्यापारिक गतिविधियों और आपूर्ति पर राज्य की कठोर निगरानी थी तथा नियमों के उल्लंघन पर कठोर दंड दिए जाते थे। इस कारण यह व्यवस्था शासक की व्यक्तिगत शक्ति और प्रशासनिक अनुशासन पर अत्यधिक निर्भर रही। अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद इन नियंत्रणों का तेजी से कमजोर पड़ना यह दर्शाता है कि यह व्यवस्था स्थायी और स्वाभाविक आर्थिक संस्थाओं के विकास की बजाय एक सुदृढ़ केंद्रीकृत शासन की परिस्थितियों पर आधारित थी। इसलिए यद्यपि इन सुधारों ने अल्पकाल में कीमतों को नियंत्रित रखने, सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति और शहरी बाजारों में नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने में सफलता प्राप्त की, फिर भी उनकी दीर्घकालिक स्थिरता सीमित रही और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर उनका दबाव एक गंभीर समस्या बना रहा।

निष्कर्ष

13वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान दिल्ली सल्तनत में विकसित हुई 'बाजार संस्कृति' भारतीय आर्थिक इतिहास का एक अत्यंत गतिशील और परिवर्तनकारी अध्याय है। यह काल अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य नियंत्रण के साहसिक और क्रूर आर्थिक अधिनायकवाद से शुरू होकर, तुगलक काल की मौद्रिक विविधताओं और लोदी

काल के सराय-आधारित विकेंद्रीकृत अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक नेटवर्क तक फैला हुआ है।nइब्न बतूता, शिहाबुद्दीन अल-उमरी, और अफानासी निकितिन जैसे विदेशी यात्रियों के समकालीन वृत्तांत इस बाजार संस्कृति की विशालता, प्रचुरता, विविधता और इसके सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व के अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि इस व्यवस्था में तीव्र वर्ग-विभाजन और ग्रामीण आबादी का शोषण जैसे अंतर्निहित दोष मौजूद थे, फिर भी इसने जिस मौद्रिक प्रणाली, हुंडी नेटवर्क, और शहरी विन्यास को जन्म दिया, उसने न केवल सल्तनत को राजनीतिक स्थिरता प्रदान की, बल्कि आगे चलकर मुगल साम्राज्य की अत्यंत समृद्ध और विश्व-प्रसिद्ध अर्थव्यवस्था के लिए एक मजबूत और टिकाऊ आधारशिला भी तैयार की।

संदर्भ सूची

प्राथमिक स्रोत

बरनी, जियाउद्दीन। *तारीख-ए-फिरोजशाही*। संपादक: सैयद अहमद खान, डब्ल्यू. एन. लीस एवं कबीरुद्दीन। कलकत्ता: बिब्लियोथेका इंडिका, 1860–1862।

अमीर खुसरो। *खजाइन-उल-फुतूह (विजय के खजाने): अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियान*। अनुवाद: मोहम्मद हबीब; ऐतिहासिक भूमिका: एस. कृष्णास्वामी अयंगर। बंबई: डी. बी. तारापोरवाला संस एंड कंपनी, 1931।

इब्न बतूता। *द रिहला ऑफ इब्न बतूता: इंडिया, मालदीव आइलैंड्स एंड सीलोन*। अनुवाद एवं टिप्पणी: महदी हुसैन। गायकवाड़ ओरिएंटल सीरीज, संख्या 122। बड़ौदा: ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, 1953।

अल-उमरी, शिहाबुद्दीन अहमद इब्न याह्या। *मसालिक अल-अबसार फी ममालिक अल-अमसार: सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के अधीन भारत का चौदहवीं शताब्दी का अरब विवरण*। अनुवाद: इक्तिदार हुसैन सिद्दीकी एवं काजी मोहम्मद अहमद। अलीगढ़: सिद्दीकी पब्लिशिंग हाउस, 1972।

इसामी, अब्दुल मलिक। *फुतूह-उस-सलातीन*। संपादक: ए. एस. उषा। मद्रास: मद्रास विश्वविद्यालय, 1948।

मेजर, आर. एच., संपादक। *पंद्रहवीं शताब्दी में भारत: केप ऑफ गुड होप की पुर्तगाली खोज से पूर्व भारत की यात्राओं के वृत्तांतों का संग्रह*। लंदन: हक्लूट सोसाइटी, 1857।

निकितिन, अफानासी। "अथानासियस निकितिन ऑफ त्वेर की यात्राएँ।" अनुवाद: काउंट मिखाइल वीलहॉर्स्की। आर. एच. मेजर संपादित *पंद्रहवीं शताब्दी में भारत* में। लंदन: हक्लूट सोसाइटी, 1857।

द्वितीयक स्रोत

हबीब, मोहम्मद एवं खलीक अहमद निजामी, संपादक। *ए कॉम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खंड V: दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.)* । दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1970।

हबीब, इरफान। *मध्यकालीन भारत का आर्थिक इतिहास, 1200–1500*। नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन इंडिया, 2011।

रायचौधरी, तपन एवं इरफान हबीब, संपादक। *द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खंड I: लगभग 1200 से लगभग 1750 ई.*। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982।

हबीब, इरफान। "अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य-नियंत्रण: जियाउद्दीन बरनी के विवरण का पुनर्मूल्यांकन।" *द इंडियन इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू*, खंड 21, अंक 4, 1984।

चंद्र, सतीश। *मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगल तक—दिल्ली सल्तनत (1206–1526), भाग प्रथम*। संशोधित संस्करण। नई दिल्ली: हर-आनंद पब्लिकेशन्स, 2004।

कुमार, सुनील। *द इमर्जेन्स ऑफ द दिल्ली सल्तनत, 1192–1286*। रानीखेत/नई दिल्ली: परमानेंट ब्लैक, 2007।

जैक्सन, पीटर। *द दिल्ली सल्तनत: ए पॉलिटिकल एंड मिलिट्री हिस्ट्री*। कैम्ब्रिज स्टडीज़ इन इस्लामिक सिविलाइजेशन। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।

अशरफ, के. एम. । *हिंदुस्तान की जनता का जीवन और परिस्थितियाँ, 1200–1550 ई.: मुख्यतः इस्लामी स्रोतों पर आधारित*। पुनर्मुद्रित संस्करण। नई दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2000।

लाल, किशोरी सरन। *खिलजियों का इतिहास, 1290–1320 ई.* द्वितीय संशोधित संस्करण। बंबई: एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1967।

डिग्बी, साइमन। *दिल्ली सल्तनत में युद्ध-घोड़े और हाथी: सैन्य आपूर्ति का एक अध्ययन*। ऑक्सफोर्ड: ओरिएंट मोनोग्राफ्स, 1971।

डेयल, जॉन एस. । *लिविंग विदाउट सिल्वर: प्रारंभिक मध्यकालीन उत्तर भारत का मौद्रिक इतिहास*। दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990।

मोरलैंड, डब्ल्यू. एच.। *मुस्लिम भारत की कृषि व्यवस्था: परिशिष्टों सहित एक ऐतिहासिक अध्ययन*। कैम्ब्रिज: डब्ल्यू. हेफर एंड संस, 1929।

सक्सेना, बी. पी. । "अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक विनियम।" मोहम्मद हबीब एवं खलीक अहमद निजामी संपादित *ए कॉम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खंड V: दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.)*, पृ. 372–391। दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1970।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध
ISSN 2321 – 9726
WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY
ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)
WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE
ISSN 2319 – 9202
WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES
ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)
WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY
ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION
ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM